अंक-1 , अक्टूबर-नवंबर 2011

गुब्बारा

बच्चों का अपना अखबार

कहां रहेगी चिड़िया

आंधी आई जोर–शोर से
डाली टूटी है झकोर से
उड़ा घोंसला बेचारी का
किससे अपनी बात कहेगी
अब यह चिड़िया कहां रहेगी ?

घर में पेड़ कहां से लाएँ
कैसे यह घोंसला बनाएँ
कैसे फूटे अंडे जोड़ें
किससे यह सब बात कहेगी
अब यह चिड़िया कहां रहेगी ?

–महादेवी वर्मा

फिर आया गुब्बारा

आपका गुब्बारा फिर से आपके हाथों में है। गुब्बारा का अपना डेढ़ दशक का इतिहास है। रंग बिरंगे कलेवर और सुगंध और स्वाद वाला गुब्बारा आपको अपनी कल्पनाओं के आकाश की उड़ान भरवाता रहा है। गुब्बारा की इन लंबी उड़ानों ने हमें देश–विदेश के बहुत बड़े–बड़े लेखकों, कवियों, रचनाकारों की अनमोल रचनाएं पढ़ने का आनंद दिलवाया है। विभिन्न चित्रकारों के सहज और खूबसूरत चित्रों ने रंगों के नए कल्पनालोक में विचार के अवसर दिलवाएं हैं। बच्चों ने अपनी रचनाओं से भी गुब्बारा को और ऊंचा उड़ाने में अपना सहयोग किया है। हम यहां बाल मंचों, प्रेरणा मंचों के बच्चों और किशोर–किशोरियों को भी याद करेंगे जिन्होंने गुब्बारा को पोथी घर की शान बनाया। हर बच्चे में गुब्बारा पढ़ने की आदत डाली। हम ऐसे भी कुछ बड़े लोगों को जानते हैं जिन्होंने गुब्बारा को बहुत प्यार दिया और उसके अंक संभाल के रख रखे हैं। हम उनका आभार मानते हैं। हम सबको सदैव प्रेरणा देने वाले भाई साहब रमेश थानवी बहुत बड़े हैं। बाल मन को पढ़ना और उसके अनुकूल रचना, उसकी सहज भाषा, सदैव हम सब उनसे सीखते रहे हैं। गुब्बारा की शुरुआत उन्हीं ने की। हम उनका, उनकी रचनाओं का, उनके तमाम सहयोग का आभार मानते हैं।

सिनेमा आया सफाई लाया

कोलायत ब्लॉक के गिर्राजसर गाँव के माध्यमिक विद्यालय में पर्यावरण और स्वच्छता को लेकर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में पांच विद्यालयों के 200 से भी ज्यादा बच्चों ने भाग लिया। कार्यशाला में सिनेमा के माध्यम से स्वच्छ और खुशहाल गाँव के बारे में बताया गया। कार्यशाला में गिर्राजसर गाँव की आंगनबाड़ी कार्यकर्ता पारो बाई,

पैथड़ासर गाँव के जिला परिषद सदस्य जयराम कड़ेला भी आए। उन्होंने बच्चों को सफाई के महत्व के बारे में बताया। इस कार्यशाला में पर्यावरण और स्वास्थ्य पर पोस्टर बनाना, चित्र बनाना और कविता लेखन जैसी प्रतियोगिताएं भी हुई। जिसमें जीतने वाली टीम के सभी सदस्यों को पुरस्कार दिए गए।

कोलायत में हुई बच्चों की कार्यशाला

11 अक्टूबर को कोलायत में बाल मण्डलों, किशोर मंच और किशोरी प्रेरणा मंचों के पदाधिकारियों की कार्यशाला हुई। इस दिन भर चली कार्यशाला में कोलायत ब्लॉक के 122 गांवों के 53 लड़कियों सहित 144 पदाधिकारियों ने भाग लिया। बच्चों के नेताओं की इस कार्यशाला में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, पुलिस, बाल सुरक्षा एवं अधिकार, जिला बाल कल्याण समिति एंव किशोर न्यायालय पर संदर्भ व्यक्तियों ने विस्तार से जानकारी दी। विभिन्न समूहों के नेताओं ने अपने–अपने क्षेत्र के बच्चों एवं समुदाय के लिए कुछ काम भी प्राथमिकता पर तय किये। मलेरिया के बढ़ते प्रकोप से लोगों को राहत दिलवाने के लिए भी तीन सुदृढ़ कदम तय किये गए। पहला–7 दिन तक पानी इकट्ठा नही रहने देना। दूसरा–गम्बूशिया मछली के सहयोग से मच्छर पैदा ही नहीं होने देना। तीसरा–सभी बुखार वालों के खून की जांच करवाना और मलेरिया आने पर पूरी दवा लेने के लिए मरीज की समझाइश करना।

बच्चों के समाचार

बच्चों के साथ नाटक कार्यशाला

उरमूल सीमांत के बज्जू परिसर में 12 से 16 अक्टूबर तक नाटक कार्यशाला हुई। बीकानेर के सुपरिचिति रंगकर्मी श्री राम सहाय ने दियातरा और सुरजड़ा क्षेत्र के बाल मण्डलों के 12 सदस्यों को नाटक और अभिनय के बारे में जानकारी दी। पाँच दिनों की इस रोचक कार्यशाला में बच्चों ने नाटक कैसे किया जाता है, अपने गाँव की परेशानी को कैसे नाटक से हल किया जा सकता है। जैसी बहुत सी अच्छी बातें सीखी। इस कार्यशाला से बच्चों में इतना आत्मविश्वास आ गया कि वे अब अपनी गाँव की समस्याओं पर नाटक तैयार कर उसका मंचन कर सकते हैं। कार्यशाला के अंत में सभी ने तय किया कि बच्चों के अधिकार के लिए वे नाटकों का मंचन करेंगे। इसी के साथ बाल अधिकारों की अवेहलना के लिए चाइल्ड लाइन के नम्बर 1098 तथा उसके प्रयोग के लिए भी वे नाटकों द्वारा प्रचार–प्रसार करेंगे।

भारत की जनगणना 2011

महिलाएं
58,64,69,174
अट्ठावन करोड़, चौंसठ लाख, उनहत्तर हजार, एक सौ चौहत्तर

पुरुष
62,37,24,248
बासठ करोड़, सैंतीस लाख, चौबीस हजार, दो सौ अड़तालिस

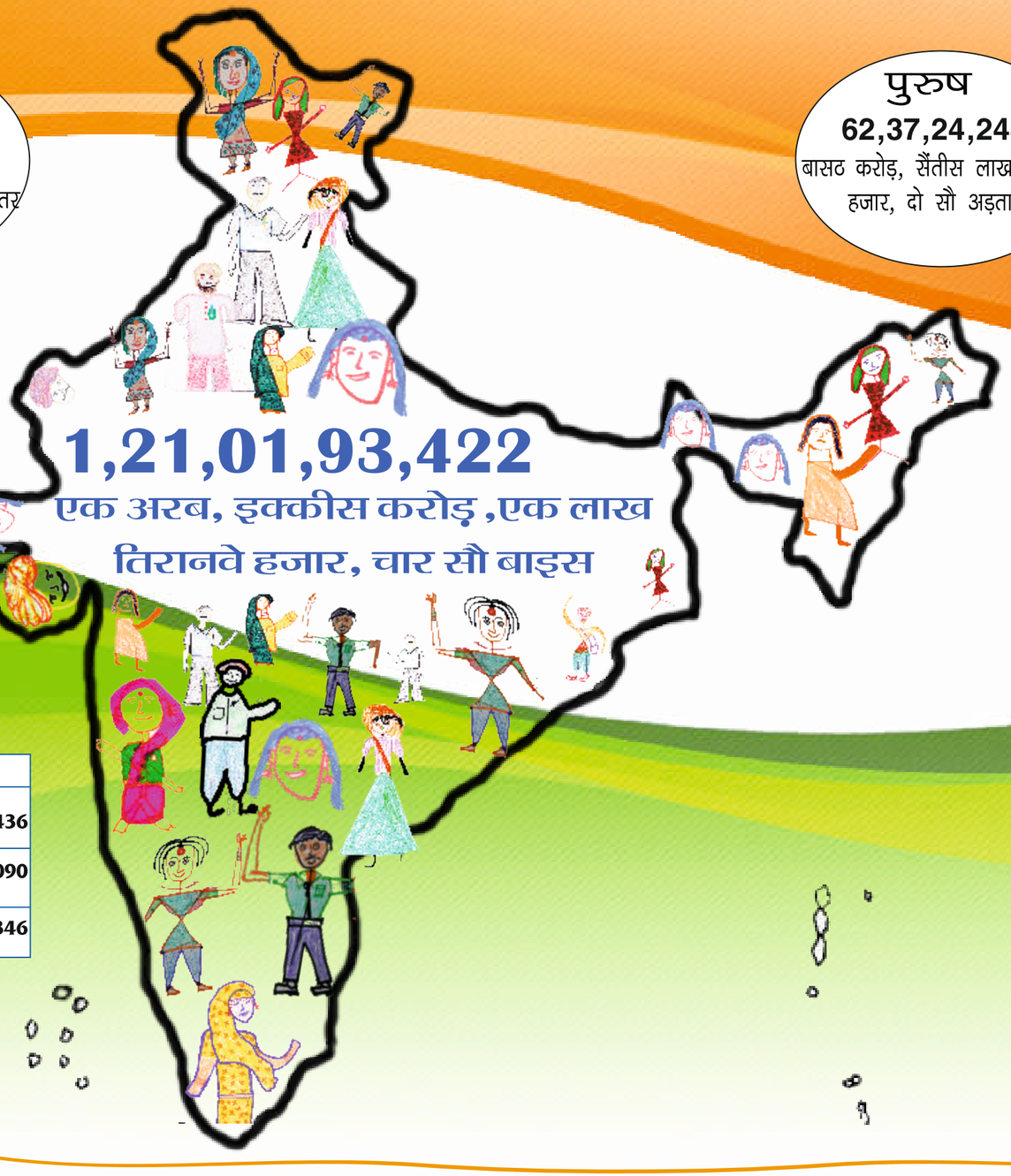

	2011	2001
कुल जनसंख्या	1,21,01,93,422	1,02,87,37,436
पुरुष	62,37,24,248	53,22,23,090
महिला	58,64,69,174	49,65,14,346

जनगणना 2011

हमारे देश में हर दस साल में एक बार जनता की गिनती होती है। बड़े-छोटों की कुल जनसंख्या जानने की इस गिनती को जनगणना कहते हैं। हमारे देश में जनगणना के आंकड़े 1901से उपलब्ध हैं। हर दसवें साल जनगणना नियमित रुप से हो रही है।

इस वर्ष 2011 में हमारी जनगणना हुई। 2011 की जनगणना में हमारे देश की जनता की कुल संख्या 1,21,01,93,422 हो गई है। इसमें 62,37,24,248 पुरुष और 58,64,69,174 संख्या महिलाओं की है। हमारे देश की पिछली जनगणना 2001 में हुई थी। 2001 में हमारी कुल जनसंख्या 1,02,87,37,436 थी। कुल जनसंख्या में 53,22,23,090 पुरुष और 49,65,14,346 महिलाए थीं। पिछले दस सालों में हमारी जनसंख्या 1,02,87,37,436 से बढ़कर 1,21,01,93,422 हो गई। इसका मतलब हुआ कि देश में 10 सालों में जनसंख्या में 18,14,55,986 की बढ़ोतरी हुई।

तारंग गांव की बाल पंचायत

सारा खाना खा जाते हैं

भारत के 28 राज्यों में से एक राज्य है झारखंड। जिसकी राजधानी है रांची। रांची से लगभग 70 किलोमीटर दूर एक गाँव है तारंग। इस गाँव में रहने वाले परिवार के लोग अपने बच्चों को शाला भेजने के बजाय ईट–भट्ठों और खेतों में मजदूरी करने के लिए भेजते थे। जिससे बच्चे कभी न तो शाला जा पाते थे और न ही खेल पाते थे। गाँव के बच्चों ने इस परेशानी से छूटकारा पाने के लिए मिलकर एक बाल पंचायत बनाई। यह बाल पंचायत अपने बाल मंच की तरह ही है। जिसमें 10 साल से 16 साल तक के बच्चे शामिल हैं।

तारंग गाँव की बाल पंचायत ने अपने गांव में बैठक कर गाँव की परेशानियों को हल करने की योजना बनाई। योजना के तहत सुबह बाल पंचायत पूरे गाँव का भ्रमण करती। गाँव के भ्रमण के बाद ऐसे घरों को चिंहित किया जाता। जिस घर में बच्चे मजदूरी के लिए जाते हैं। भ्रमण के बाद बैठक कर समीक्षा की जाती है। चिंहित किए गए घरों की सूची बनाकर उसे रजिस्टर में लिखा जाता है। गाँव की पंचायत की तरह ही यह बाल पंचायत परेशानियों को हल करने के लिए फरमान जारी करती है। फरमान एक तरह का आदेश होता है जिसे गांव के सभी लोगों को मानना होता है। जो यह फरमान नहीं मानता उसे सजा मिलती है। इसी तरह तारंग गाँव की बाल पंचायत ने भी गांव में फरमान जारी किया। हर माता–पिता अपने बच्चों को शाला भेजें। अगर कोई ऐसा नहीं करता तो बाल पंचायत उसके घर की रसोई में घूसकर सारा खाना खा जाएगी। अभी कुछ दिन पहले ही तारंग गाँव की बाल पंचायत ने भ्रमण के दौरान पाया कि उसके पास के गांव में दो बच्चे जतन और परबतिया शाला न जाकर मजदूरी करते थे। पंचायत ने उनके माता–पिता के नाम फरमान जारी कर दिया। जतन और परबतिया के माता–पिता ने फरमान नहीं माना। जिसपर बाल पंचायत ने उनके घर में घुसकर सारा खाना खा लिया। बाल पंचायत तब तक उनके घर में घुसकर खाना खाती रही जब तक कि जतन और परबतिया के माता–पिता ने उन्हें शाला में दाखिला नहीं दिला दिया। अब जतन और परबतिया दोनो शाला जाते हैं।

–बीबीसी से साभार

प्रश्न पिटारा

इन प्रश्नों के उत्तर गुब्बारा के इस अंक में खोजिए

1. 2011 जनगणना में महिलाओं की संख्या कितनी है?
2. चाइल्ड लाइन से मदद के लिए किस नंबर पर फोन करोगे?
3. मच्छर पैदा होने से रोकने वाली मछली का नाम क्या है?
4. भारत में कुल कितने राज्य हैं?

उ. 1. 58,64,69,174, 2. 1098, 3. गम्बूसिया, 4. 28

बाल दिवस पर
बच्चों के लिए

हाथी मेरे साथी

चाचा नेहरु
पर बनाया
शंकर का कार्टून

आपको मालूम ही है कि देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु बच्चों को बहुत प्यार करते थे। इसीलिए आज भी पूरे देश के बच्चे उन्हें चाचा नेहरु के नाम से पुकारते हैं। चाचा नेहरु को कार्टून भी बहुत पंसद थे। देश के अग्रणी महान कार्टूनिस्ट श्री केशव शंकर पिल्लाई के कार्टून तो चाचा नेहरु को बेहद पसंद थे।
वे उन्हें कहा करते थे– 'मुझे भी नहीं छोड़ना शंकर'

आपको यह भी मालूम हो श्री शंकर एक महान कार्टूनिस्ट के साथ बच्चों की रचनात्मकता को पर्याप्त जगह और अवसर दिलावाने के पक्षधर रहे हैं। उन्होंने बच्चों में चित्रकारिता को बढ़ावा देने के लिए चित्र प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। बच्चों के बनाए चित्रों के लिए 'शंकर्स वीकली मैगजीन' का प्रकाशन किया। दिल्ली में डॉल म्यूजियम और चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट की स्थापना भी की। ऊपर दिए गया कार्टून श्री शंकर ने 23 जनवरी 1949 को बनाया था।

आमंत्रण

गुब्बारा में हम सब बच्चों को लिखने के लिए सादर आमन्त्रित करते हैं। गुब्बारे के अगले अंक में हम आपके गाँव की कहानी छापेंगे। आप सब बच्चों को अपने गाँव की कहानी लिखनी है। आपका गाँव कितना पुराना है। किसने बसाया। हाँ यह सब इतिहास आपको मालूम हो तो बहुत अच्छा है। नहीं तो आप अपने घर में दादा–दादी या गाँव के बुजुर्गों से अपने गाँव की कहानी, पुरानी बातें सुनिए और उसे विस्तार से लिखिये। आप अपनी कहानी में गाँव की विशेष बातों, चीजों, स्थानों के बारे में लिख सकते है। आप अपनी कहानी को लिख कर हमारे पास भिजवा दीजिए। हम उन सब कहानियों को कहानी लेखकों के निर्णायक दल को देंगे। उनके निर्णय से तीन श्रेष्ठ कहानियों को गुब्बारा के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे। इन कहानियों को प्रकाशित करने के साथ–साथ इनके लेखकों को इनाम में अच्छी कहानियों की किताबें दी जाएंगी।
तो आपको लिखना है अपने गाँव की कहानी। हम प्रतीक्षा करेंगे आपकी अपनी भाषा में आपके अपने गाँव की कहानी।

क्या आप जानते हैं?

खरगोश के दांत पैदा होते ही निकल जाते हैं

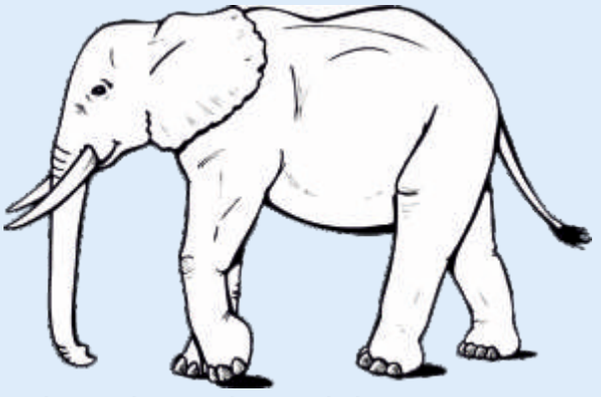

हाथी एक–दूसरे को संदेश देने के लिए पैर पटकते हैं। हाथी के पैर का कंपन 8 किलोमीटर दूर दूसरे हाथी को पता लग जाता है

ब्लू व्हेल दुनिया की सबसे बड़ी जीव है। ब्लू व्हेल की आवाज पानी में 100 मील दूर तक जाती है। यह इतनी तेज होती है कि हम इसे सून नहीं सकते

जिराफ की नींद सबसे कम होती है। वह सिर्फ 30 मिनट सोता है

CHILD LINE 1098 NIGHT & DAY

चाइल्ड लाइन
1098
दिन रात, नि:शुल्क

आप चाइल्ड लाइन सेवा का सहयोग ले सकते हैं यादि

* कोई खोया या बिछड़ा बच्चा आपको मिले
* बाल मजदूरी, बच्चों पर हिंसा या किसी बच्चे का शोषण हो रहा हो
* बाल विवाह हो रहा हो
* कोई बच्चा अकेला या बीमार हो

फोन से बस डायल करें

दस.....नौ.....आठ
1098

चाइल्ड लाइन 1098 बिल्कुल नि:शुल्क है

संपादनः रवि मिश्रा
संपादन सहयोगः ज्ञानेंद्र श्रीमाली,
सुनील लहरी,रवि चतुर्वेदी
उरमूल सीमान्त समिति बज्जू के लिए प्लान इंडिया के सहयोग से , उरमूल ट्रस्ट, उरमूल भवन, बीकानेर द्वारा प्रकाशित। ईमेल–mail@urmul.org
मुद्रक–कल्याणी प्रिंटर्स, बीकानेर।